

कृष्णदास संस्कृत सीरीज

२५७

\*\*\*\*\*

कृष्णद्वैपायनमहर्षिव्यासविरचितम्

# बृहन्नारदीयपुराणम्

मूल तथा भाषानुवाद

भाषाभाष्यकार

एस. एन. खण्डेलवाल  
(श्री नाथ खण्डेलवाल)

पूर्वार्द्धम्



चौखम्बा कृष्णदास अकादमी

वाराणसी

## विषयानुक्रमिका

### अध्याय

### पृष्ठाङ्क

|  |     |
|--|-----|
| १. नैमिषारण्य में मुनिगण द्वारा तप तथा सूत एवं ऋषिगण का संवाद    | १   |
| २. सनत्कुमार-नारद संवाद वर्णन नारद कृत विष्णु स्तुति             | ९   |
| ३. सृष्टि, भारतवर्ष तथा तत्सम्बन्धित भूगोल का वर्णन              | १६  |
| ४. महर्षि मार्कण्डेय के चरित्र का वर्णन                          | २४  |
| ५. महर्षि मार्कण्डेय चरित वर्णन                                  | ३५  |
| ६. पुण्यतोया गंगा के माहात्म्य का वर्णन                          | ४२  |
| ७. गंगा के माहात्म्य का वर्णन                                    | ४९  |
| ८. गंगा माहात्म्य का वर्णन                                       | ५७  |
| ९. गंगाजल स्पर्श द्वारा सौदास (मित्रसह) की शापमुक्ति             | ७२  |
| १०. राजा बलि द्वारा देवगण की पराजय                               | ८६  |
| ११. गंगा की उत्पत्ति का वर्णन                                    | ९२  |
| १२. धर्माख्यान वर्णन   | ११२ |
| १३. धर्माख्यान कथन   | १२१ |
| १४. पापसमूह का प्रायश्चित्त तथा श्राद्धपञ्चक वर्णन               | १३६ |
| १५. नरक यातना तथा गंगा को लाया जाना                              | १४५ |
| १६. गंगावतरण द्वारा भगीरथ का स्वकुल उद्धार करना                  | १६१ |
| १७. शुक्लपक्ष के द्वादशी व्रत का उसके उद्यापन के साथ वर्णन       | १७२ |
| १८. लक्ष्मीनारायण व्रत तथा उसके सविधि उद्यापन का वर्णन           | १८२ |
| १९. विष्णु मन्दिर में ध्वज का आरोपण करना                         | १८५ |
| २०. सोमवंशोत्पन्न सुमति राजा द्वारा पूर्वजन्म वृत्तान्त का वर्णन | १९० |
| २१. श्री हरि के हरिपंचक व्रत का वर्णन                            | १९८ |
| २२. विशेष मासों में किये जाने वाले व्रतों का वर्णन               | २०१ |
| २३. भद्रशील ब्राह्मण के प्रसंग का वर्णन                          | २०४ |
| २४. ब्राह्मण-क्षत्रियादि वर्णों के सदाचार का वर्णन               | २१३ |
| २५. वर्णाश्रमाचार विधि वर्णन                                     | २१७ |
| २६. द्विजों के लिये विहित वेदाध्ययनादि धर्मों का वर्णन           | २२३ |
| २७. गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यासी धर्म का वर्णन                 | २२७ |
| २८. विष्णु मन्दिर में ध्वजारोपण का वर्णन                         | २३८ |
| २९. तिथि निर्णय प्रसंग   | २४६ |
| ३०. प्रायश्चित्त विधि का विस्तृत वर्णन                           | २५२ |

## अध्याय

## पृष्ठाङ्कः

|  |     |
|--|-----|
| ३१. यमदूतगण का कृत्य वर्णन   | २६३ |
| ३२. भवाटवी वर्णन   | २७० |
| ३३. योग का वर्णन   | २७८ |
| ३४. हरिभक्त के लक्षणों का वर्णन  | २९४ |
| ३५. ज्ञान निरूपण   | ३०१ |
| ३६. यज्ञमाली तथा सुमाली द्वारा उत्तमलोक प्राप्त करना                           | ३०८ |
| ३७. विष्णु माहात्म्य वर्णन   | ३१३ |
| ३८. विष्णु माहात्म्य वर्णन   | ३२० |
| ३९. विष्णु माहात्म्य वर्णन   | ३२७ |
| ४०. विष्णु माहात्म्य वर्णन   | ३३४ |
| ४१. युगों का स्थिति लक्षण, विष्णु के नाम-माहात्म्य का वर्णन                    | ३४० |
| ४२. सृष्टि-वर्णन   | ३५१ |
| ४३. जीव गति, द्विजाचार का वर्णन  | ३६३ |
| ४४. ध्यान योग वर्णन  | ३७८ |
| ४५. राजा जनक को पञ्चशिख मुनि का उपदेश  | ३८९ |
| ४६. त्रिविध ताप से मुक्ति के उपाय का वर्णन                                     | ३९८ |
| ४७. मुक्तिदायक योग का वर्णन  | ४०९ |
| ४८. राजा भरत का उपाख्यान तथा ज्ञानचर्चा वर्णन                                  | ४१७ |
| ४९. परमार्थ निरूपण   | ४२६ |
| ५०. शिक्षा का वर्णन  | ४३६ |
| ५१. वेद के द्वितीय अंग कल्प का वर्णन, गणपतिपूजन, ग्रहशान्ति एवं श्राद्ध निरूपण | ४६४ |
| ५२. व्याकरण शास्त्र का वर्णन   | ४८० |
| ५३. निरुक्त लक्षण  | ४९३ |
| ५४. ज्योतिष वर्णन  | ५०२ |
| ५५. त्रिस्कन्ध ज्योतिष तथा जातक स्कन्ध   | ५४२ |
| ५६. त्रिस्कन्ध ज्योतिष-संहिता प्रकरण   | ६०३ |
| ५७. छन्दः शास्त्र का संक्षिप्त परिचय   | ६९५ |
| ५८. शुक के इतिहास का वर्णन   | ६९८ |
| ५९. अध्यात्मतत्त्व निरूपण  | ७०५ |
| ६०. सनत्कुमार द्वारा शुक को ज्ञान का उपदेश                                     | ७११ |
| ६१. सनत्कुमार द्वारा शुक को ज्ञानोपदेश देना                                    | ७२० |
| ६२. मोक्षधर्म का निरूपण  | ७२८ |



## अध्याय

## पृष्ठाङ्क

|  |      |
|--|------|
| ६३. पाशुपत दर्शन तत्त्व वर्णन  | ७३६  |
| ६४. दीक्षा विधि वर्णन  | ७४८  |
| ६५. मन्त्र जपविधि वर्णन  | ७५५  |
| ६६. प्रातःकृत्य, सन्ध्या-तर्पणादि वर्णन                                | ७६५  |
| ६७. देवपूजा-विधि वर्णन   | ७८१  |
| ६८. गणेश मन्त्रविधान का वर्णन  | ७९४  |
| ६९. मन्त्रविधान निरूपण   | ८०२  |
| ७०. विष्णु के अष्टाक्षर प्रभृति नाना मन्त्र के अनुष्ठान की विधि        | ८१५  |
| ७१. नृसिंह मन्त्र की उपासना का वर्णन, नृसिंह गायत्री आदि का वर्णन      | ८३३  |
| ७२. हयग्रीव मन्त्रोपासना का वर्णन                                      | ८५२  |
| ७३. लक्ष्मण तथा राम मन्त्र जपविधि                                      | ८५६  |
| ७४. हनुमत् मन्त्र का वर्णन   | ८७३  |
| ७५. हनुमान हेतु दीपदान का वर्णन  | ८९१  |
| ७६. कार्तवीर्य महिमा   | ९००  |
| ७७. श्री कार्तवीर्य कवच  | ९११  |
| ७८. हनुमत्कवच वर्णन  | ९२२  |
| ७९. हनुमत् चरित्र वर्णन  | ९२७  |
| ८०. श्रीकृष्ण सम्बन्धित मन्त्र की साधना का वर्णन                       | ९६०  |
| ८१. मनोकामना-भेद से कृष्ण मन्त्रों के भेद का कथन                       | ९९०  |
| ८२. राधा-कृष्ण सहस्रनामस्तव  | १००६ |
| ८३. राधा के अंश से उत्पन्न पंचप्रकृति वर्णन                            | १०२३ |
| ८४. जपहोम विधि, देवी मन्त्र निरूपण                                     | १०३९ |
| ८५. वाग्देवी की अवतार रूपा काली प्रभृति के मन्त्रों का वर्णन           | १०४९ |
| ८६. महालक्ष्मी अवतार वर्णन बगला प्रभृति शक्ति का मन्त्र एवं साधन वर्णन | १०६२ |
| ८७. दुर्गा मन्त्रों का सविधि-वर्णन                                     | १०७३ |
| ८८. राधावतार के अन्तर्गत षोडश देवताओं के मन्त्र-यन्त्र-पूजन का वर्णन   | १०८७ |
| ८९. शक्तिसहस्रनाम कवच वर्णन  | १११० |
| ९०. अर्चन विधान तथा नित्यापटल वर्णन                                    | ११२५ |
| ९१. स्तोत्र सहित माहेश्वर मन्त्र विधान                                 | ११४७ |
| ९२. ब्रह्मपुराण का संक्षिप्त वर्णन                                     | ११६७ |
| ९३. पद्मपुराण का वर्णन   | ११७१ |
| ९४. विष्णु पुराण की विषयानुक्रमणिका                                    | ११७५ |

| अध्याय   | पृष्ठाङ्क |
|--|-----------|
| ९५. वायु पुराण की विषयानुक्रमणिका                                    | ११७७      |
| ९६. श्रीभागवत पुराण की विषयानुक्रमणी                                 | ११७८      |
| ९७. श्रीनारदीय पुराण की विषयानुक्रमणी                                | ११८१      |
| ९८. मार्कण्डेय पुराण की विषयानुक्रमणिका                              | ११८२      |
| ९९. अग्निपुराण की विषयानुक्रमणिका                                    | ११८४      |
| १००. भविष्य पुराण की विषयानुक्रमणिका                                 | ११८६      |
| १०१. ब्रह्मवैवर्तपुराण की विषयानुक्रमणिका                            | ११८८      |
| १०२. लिंगपुराण की विषयानुक्रमणिका                                    | ११९१      |
| १०३. वाराह पुराण की विषयानुक्रमणिका                                  | ११९३      |
| १०४. स्कन्दमहापुराण की विषयानुक्रमणिका                               | ११९४      |
| १०५. वामनपुराण की विषयानुक्रमणी                                      | १२११      |
| १०६. कूर्मपुराण की विषयानुक्रमणी                                     | १२१३      |
| १०७. मत्स्यपुराण की सूची   | १२१५      |
| १०८. गरुड़ पुराण की विषयानुक्रमणी                                    | १२१७      |
| १०९. ब्रह्माण्डपुराणगत विषयों का वर्णन                               | १२२०      |
| ११०. द्वादश मासों में प्रतिपदाव्रत                                   | १२२३      |
| १११. द्वादश मासीय द्वितीया व्रत वर्णन                                | १२२८      |
| ११२. द्वादश मासीय तृतीय व्रत वर्णन                                   | १२३१      |
| ११३. द्वादश मासीय चतुर्थी व्रताचरण वर्णन                             | १२३७      |
| ११४. द्वादश मासीय पंचमी व्रत वर्णन                                   | १२४५      |
| ११५. द्वादशमासीय षष्ठी व्रत वर्णन                                    | १२५१      |
| ११६. द्वादशमासीय सप्तमी व्रत वर्णन                                   | १२५६      |
| ११७. द्वादशमासीय अष्टमी व्रत वर्णन                                   | १२६२      |
| ११८. द्वादश मासों में नवमी व्रतों का विधान एवं महिमा                 | १२७१      |
| ११९. द्वादश मासीय दशमी व्रत  | १२७५      |
| १२०. द्वादश मासीय एकादशी व्रत वर्णन                                  | १२८१      |
| १२१. द्वादश मासीय द्वादशी व्रत वर्णन                                 | १२९०      |
| १२२. द्वादश मासीय त्रयोदशी व्रत                                      | १३०२      |
| १२३. द्वादश मासीय चतुर्दशी व्रत विधि-वर्णन                           | १३०९      |
| १२४. द्वादश मासीय पूर्णिमा व्रत-विधान                                | १३१६      |
| १२५. देवर्षि सनकादि तथा नारद का प्रस्थान, नारदपुराण का माहात्म्य कथन | १३२४      |



कृष्णदास संस्कृत सीरीज

२५७

\*\*\*\*

कृष्णद्वैपायनमहर्षिव्यासविरचितम्

# बृहन्नारदीयपुराणम्

मूल तथा भाषानुवाद

भाषाभाष्यकार

एस. एन. खण्डेलवाल  
(श्री नाथ खण्डेलवाल)

उत्तरार्द्धम्



चौखम्बा कृष्णदास अकादमी  
वाराणसी

## विषयानुक्रमिका

### अध्याय

### पृष्ठांक

|   |     |
|---|-----|
| १. एकादशी माहात्म्य   | १   |
| २. तिथियों से सम्बन्धित विचार   | ४   |
| ३. यम का ब्रह्मलोक गमन प्रसंग   | ९   |
| ४. यम द्वारा रुक्मांगद के प्रभाव तथा स्वदुःख का वर्णन   | १६  |
| ५. यम का विलाप  | १९  |
| ६. ब्रह्मदेव का कथन, भक्तगौरव वर्णन   | २१  |
| ७. मोहिनी के प्रति ब्रह्मा का वाक्य वर्णन   | २३  |
| ८. रुक्मांगद-धर्मांगद संवाद वर्णन   | ३०  |
| ९. रुक्मांगद तथा धर्मांगद का संवाद  | ३३  |
| १०. रुक्मांगद-सन्ध्यावली संवाद तथा रुक्मांगद-वामदेव संवाद   | ३८  |
| ११. रुक्मांगद वामदेव संवाद तथा मोहिनी से मिलने का वर्णन   | ४४  |
| १२. रुक्मांगद-मोहिनी-संवाद वर्णन  | ४९  |
| १३. रुक्मांगद-मोहिनी विवाह प्रसंग   | ५३  |
| १४. गोधाविमुक्ति प्रसंग वर्णन   | ५६  |
| १५. मोहिनी चरित के अन्तर्गत पिता-पुत्र संवाद वर्णन  | ६३  |
| १६. मोहिनी चरित वर्णन के अन्तर्गत पतिव्रता उपाख्यान   | ६७  |
| १७. पतिव्रता का उपाख्यान, सन्ध्यावली द्वारा सेवित मोहिनी के यहां राजा का आगमन                       | ७५  |
| १८. धर्मांगद का पिता एवं मोहिनी के प्रति उदार होने का माताओं से अनुरोध                              | ८१  |
| १९. मोहिनी-रुक्मांगद विलास वर्णन  | ८६  |
| २०. धर्मांगद द्वारा दिग्विजय  | ९०  |
| २१. धर्मांगद का नागकन्यागण से विवाह   | ९३  |
| २२. कार्तिक माहात्म्य का वर्णन  | ९७  |
| २३. सन्ध्यावली का कार्तिक मास में कृच्छ्रव्रत प्रारंभ करना  | १०५ |
| २४. राजा द्वारा मोहिनी के आक्षेप का खंडन परन्तु मोहिनी द्वारा अपने मत का पुनर्स्थापन                | ११४ |
| २५. मोहिनी का कोप करके वहां से अन्यत्र गमनोद्यत होना,<br>तथापि धर्मांगद द्वारा उसे पुनः बुलाकर लाना | ११९ |
| २६. राजा द्वारा एकादशी व्रतभंग न करने का निश्चय   | १२८ |
| २७. काष्ठीला देह प्राप्त कौण्डिन्य पत्नी का पूर्व वृत्तान्त वर्णन                                   | १२९ |
| २८. राक्षसवध, राक्षसी सहित ब्राह्मण का काशी आगमन  | १४४ |
| २९. काशी माहात्म्य का वर्णन   | १५२ |
| ३०. कौण्डिन्य से राजपुत्री का विवाह प्रसंग वर्णन  | १५९ |



| अध्याय   | पृष्ठांक |
|--|----------|
| ३१. माघमासीय पुण्यदान द्वारा काष्ठीला को उत्तम लोकलाभ  | १६७      |
| ३२. मोहिनी द्वारा सन्ध्यावली के पुत्र का शिर मांगना  | १७३      |
| ३३. रानी सन्ध्यावली का राजा को पुत्रवधार्थ सहमत करना   | १७९      |
| ३४. पुत्रवधोद्यत राजा को देख मोहिनी की मूर्च्छा तथा भगवान् का प्रकट होना                                   | १८५      |
| ३५. वरोद्यत देवगण की पुरोहित द्वारा भर्त्सना तथा ब्राह्मण शाप से मोहिनी का दग्ध होना                       | १८९      |
| ३६. मोहिनी की दुर्गति, ब्रह्मा का पुरोहित को प्रसन्न किया जाना   | १९७      |
| ३७. मोहिनी को पुनः देहलाभ तथा दशमी के अन्तिम भाग में स्थान प्राप्ति  | २०३      |
| ३८. मोहिनी-वसु संवाद-गंगा माहात्म्य वर्णन  | २०८      |
| ३९. गंगादर्शन-स्मरण-गंगाजल स्नान, इन तीनों की महिमा का वर्णन   | २१४      |
| ४०. विशेष समय में तथा विशेष स्थान पर गंगास्नान महिमा वर्णन   | २१९      |
| ४१. गंगातट पर प्रदत्त दान, तर्पण, नानाविध दान की महिमा का वर्णन एवं पूजनादि का फल वर्णन                    | २२४      |
| ४२. वर्षपर्यन्त का गंगार्चन व्रत, गुड़धेनु दानादि प्रसंग वर्णन   | २३१      |
| ४३. गंगा व्रत वर्णन  | २३६      |
| ४४. राजा विशाल का वृत्तान्त, तीर्थ महिमा   | २४८      |
| ४५. गया में पिण्डदानानि विधि का तथा प्रथम एवं द्वितीय दिवसीय कृत्य का वर्णन                                | २५६      |
| ४६. ब्रह्मतीर्थ, विष्णुतीर्थ माहात्म्य तथा गया में तृतीय दिवसीय एवं चतुर्थ दिवसीय कृत्य वर्णन              | २६७      |
| ४७. गया में पंचमदिवस कृत्य वर्णन   | २७३      |
| ४८. अविमुक्त क्षेत्र काशी महिमा  | २८२      |
| ४९. काशी तीर्थयात्रा वर्णन   | २९०      |
| ५०. काशी यात्राकाल, शिवलिंग वर्णन  | २९७      |
| ५१. काशी माहात्म्य के अन्तर्गत गंगा एवं पंचनद में स्नान से<br>महापातक निवृत्ति तथा शिवलोक लाभ प्रसंग वर्णन | ३०४      |
| ५२. पुरुषोत्तम क्षेत्र की महिमा का वर्णन, राजा इन्द्रद्युम्न को मोक्ष लाभ                                  | ३०८      |
| ५३. इन्द्रद्युम्न कृत कृष्ण स्तुति   | ३१७      |
| ५४. राजा को स्वप्न में तथा जाग्रत में हरिदर्शन, भगवत् मूर्ति निर्माण, वरलाभ,<br>प्रतिमाप्रतिष्ठा का वर्णन  | ३२३      |
| ५५. पुरुषोत्तम क्षेत्र की तीर्थयात्रा तथा वहां नृसिंहदेव की पूजा की विधि                                   | ३३४      |
| ५६. श्वेतमाधव, मत्स्यमाधव दर्शनफल तथा समुद्र-स्नान वर्णन   | ३४७      |
| ५७. नारायण पूजा विधान वर्णन  | ३५३      |
| ५८. पुरुषोत्तम क्षेत्र में स्नान, दान, श्राद्धादि का वर्णन   | ३५८      |
| ५९. गोलोकस्थ राधा-कृष्ण द्वारा पंचरूप ग्रहण वर्णन  | ३६४      |



अध्याय

पृष्ठांक

|  |     |
|--|-----|
| ६०. ज्येष्ठ शुक्लशदामी से प्रारंभ करके पूर्णिमा पर्यन्त यात्रा-उत्सव वर्णन तथा भगवान् के स्नान का सविधि निरूपण | ३६९ |
| ६१. पुरुषोत्तम माहात्म्य के अन्तर्गत क्षेत्रयात्रा विधि वर्णन तथा फल   | ३७६ |
| ६२. तीर्थप्रवर प्रयाग में स्नान-दानादि विधान का वर्णन  | ३८४ |
| ६३. प्रयाग में मकरस्थ माघस्नान की महिमा, प्रयाग के कतिपय तीर्थ का माहात्म्य वर्णन                              | ३९१ |
| ६४. कुरुक्षेत्र की महिमा तथा वहां का वर्णन   | ४०८ |
| ६५. कुरुक्षेत्र के विभिन्न तीर्थ का माहात्म्य यात्राविधि वर्णन   | ४११ |
| ६६. गंगाद्वार अर्थात् हरिद्वार के नाना तीर्थों का वर्णन  | ४२४ |
| ६७. बदरिकाश्रमस्थ नाना तीर्थ वर्णन   | ४२९ |
| ६८. कामोदा माहात्म्य वर्णन   | ४३७ |
| ६९. सिद्धनाथ चरित तथा कामाक्षा माहात्म्य वर्णन   | ४४० |
| ७०. प्रभास माहात्म्य   | ४४३ |
| ७१. पुष्कर माहात्म्य वर्णन तथा यात्रा के नियम  | ४५२ |
| ७२. गौतमाश्रम का माहात्म्य   | ४५८ |
| ७३. त्र्यम्बक, पुण्डरीकपुर माहात्म्य, शंकर स्तुति वर्णन  | ४६१ |
| ७४. गोकर्ण क्षेत्र माहात्म्य वर्णन   | ४७७ |
| ७५. लक्ष्मणाचल माहात्म्य का वर्णन  | ४८१ |
| ७६. सेतु माहात्म्य   | ४८९ |
| ७७. रामेश्वर शिवलिंग महिमा, सेतु माहात्म्य   | ४९१ |
| ७८. अवन्ती माहात्म्य वर्णन   | ४९५ |
| ७९. मथुरास्थित नाना तीर्थ के माहात्म्य का वर्णन  | ४९९ |
| ८०. वृन्दावन का माहात्म्य वर्णन  | ५०४ |
| ८१. वसु का वृन्दावन वास तथा भविष्यगत कृष्णचरित वर्णन   | ५१६ |
| ८२. तीर्थयात्रा से मोहिनी को उत्तम लोकलाभ तथा दशमी के अन्तर्भाग में स्थिति मिलना नारदीय पुराण पाठ फल वर्णन     | ५२१ |

